Himalayan J. Soc. Sci. & Humanities ISSN: 0975-9891
Vol. 12, (2017) 127-131

गढ़वाल राइफल्स के संस्थापक के रूप में बलभद्र सिंह नेगी के योगदान का मूल्यांकन

अम्बिका प्रसाद ध्यानी[1*]

[1]इतिहास विभाग हे0न0ब0गढ़वाल विश्वविद्यालय परिसर, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

*Corresponding Author Email: drapdhyani2019@gmail.com

Received: 06.07.2017; Revised: 15.08.2017; Accepted: 20.10.2017
©Society for Himalayan Action Research and Development

सारांश: गढ़वाल राइफल्स जिसका मुख्यालय लैन्सडौन है, की स्थापना के लिए सन् 1887 ई0 से पृथक बटालियन के रूप में लाट सूबेदार बलभद्रसिंह नेगी के प्रयासों का अहम योगदान रहा है। अपनी शौर्य परम्पराओं से अधिकारियों के प्रिय बलभद्र नेगी को बाद में ए0डी0सी0 (वायसराय का अंगरक्षक) बनाया गया और अपने कार्यकाल के दौरान ही बलभद्र सिंह नेगी द्वारा पृथक बटालियन का प्रस्ताव देकर उसे अन्जाम तक पहुंचाने का अनुपम प्रयास किया गया जो आज तक भी देश सेवा के लिये अद्वितीय बनी हुई है। प्रस्तुत आलेख में गढ़वाल राइफल्स की स्थापना करने में बलभद्रसिंह नेगी के अभूतपूर्व योगदान व तत्कालीन परिस्थितियां, गढ़वाल राइफल्स के प्रतिमानों को स्थापित करने, संस्थान के पारिवारिक जीवन, देश के प्रति श्रद्धा भक्ति गढ़वालियों को विशिष्ट पहचान दिलाने, आर्थिक सामाजिक सम्बल स्थापित होने का अध्ययन–विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

कुंजी शब्द: गढ़वाल राइफल्स, रेजीमेंट, रेजीमेंटल सेन्टर, लैन्सडौन, लाट सूबेदार, बटालियन, बलभद्रसिंह नेगी, पलटन, लैन्सडौन, शौर्य परम्परा, ए0डी0सी0 (एडी डि कैम्प)।

परिचय

विश्वभर में अपनी अमिट छाप बना चुकी गढ़वाल राइफल्स का इतिहास आजन्म सैन्य परम्परा से परिपूर्ण रहा है। पहाड़ की विकट परिस्थितियों में उन्हें खून के साथ यह संस्कार मिलते रहे हैं। इन्हीं विशिष्टताओं को देखने के उपरान्त भारतीय सेना के प्रधान सर एफ0एस0 रॉबर्ट्स ने गढ़वाली सैनिकों की रणकुशलता पर टिप्पणी करते हुए कहा था कि–''ये लोग जबरदस्त योद्धा हैं, इस समय पाँचवी गोरखा में अनेक गढ़वाली हैं जिन्होंने अपने को विश्वसनीय सैनिक सिद्ध किया है। अफसरों ने उन्हें भी शुद्ध गोरखा की प्रतिभा और पौरूष का माना है। दूसरी गोरखा सेना अपने गढ़वाली सैनिकों को सर्वाधिक प्रतिभावान मानती है। हर अधिकारी उनकी सैन्य प्रतिभा की तारीफ करता है[1]। गढ़वाली सैनिकों की शौर्य परम्परा का इतिहास गढ़वाल के भू–भाग में ब्रिटिशों के आगमन से पूर्व का रहा है।

गढ़वाल राइफल्स रेजीमेंन्ट की स्थापना से पूर्व गढ़वाल राइफल्स के इतिहास में महत्वपूर्ण व्यक्तित्व की विलक्षण प्रतिभा उन्मुख हुई जिन्हें गढ़वाली पलटन की स्थापना का श्रेय जाता है वह वीरता की साक्षात् प्रतिमूर्ति बने सूबेदार मेजर बलभद्रसिंह नेगी। वीर प्रसूता गढ़भूमि ने इस धरती को एक तरह से यह लौह पुरूष दिया जिसकी कड़कता, निष्कपटता, चातुर्यता एवं ईमानदारी की मिसाल आज सर्वसमाज के लिए मील का पत्थर बनकर अनुकरणीय बनी है। बलभद्र सिंह नेगी का जन्म सन् 1829 ई0[2] में पौड़ी गढ़वाल जिले के असवालस्यूँ पट्टी के हैड़ाखोली गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम धन सिंह नेगी था जो कि इनकी सत्रह वर्ष की आयु होने पर ही आत्मविलीन हो गए थे जिसके बाद बलभद्रसिंह जी का जीवन संघर्षमय हो गया था।

बलभद्रसिंह नेगी के पारिवारिक अभिलेखों के अनुसार इनके दो अन्य भाई थे बड़े भाई चित्र सिंह एवं छोटे भाई बद्री सिंह। दादाजी श्री चन्द्र सिंह जिनकी दो पत्नियाँ थी। बलभद्रसिंह नेगी की भी दो पत्नियाँ थी उद्योती देवी एवं यमकी देवी। इनसे इनकी सात सन्तानें चार लड़के एवं तीन लड़कियाँ हुई। इनके पूर्वज ग्राम–झटकण्डी, कल्जीखाल विकासखण्ड के मानदेशी नेगी थे। मानदेशी नेगी का अर्थ संभवतः राजा मान सिंह की भूमि जयपुर–राजस्थान से

गढ़वाल आने के कारण इन्हें मानदेशी कहा गया। राजा मानसिंह ने इनके परिवार से वैवाहिक सम्बन्ध भी स्थापित किये थे। ठाकुर धन सिंह नेगी प्रतिभा एवं प्रतिष्ठा सम्पन्न व्यक्ति थे एवं कुछ अक्षर ज्ञान होने के कारण इन्हें पट्टी पटवारीगिरी का कार्यभार भी सौंपा गया था[3]।

बलभद्रसिंह नेगी का बचपन काश्तकारी में व्यतीत हुआ और भैंसों की पीठ पर तिनके से लिखकर अक्षर ज्ञान करना उनकी महत्वाकांक्षा को दृष्टिगोचर करता है। इनकी साधु से भी मुलाकात का विवरण है, जिसमें साधु से वार्ता में साधु ने इनके बारे में कहा–''तुम व्यर्थ ही यहां दिन व्यतीत कर रहे हो तुम्हारे भाग्य में तो राजयोग है और एक दिन तुम महान पद प्राप्त करोगे।'' साधु की बातों से भावातिरेक होकर वे पशुधन एवं घर छोड़कर मैदानी इलाकों की ओर पैदल चल पड़े। जीवन के संघर्षों से जूझते हुए उन्होंने सेना में भर्ती होने का निश्चय कर लिया। तत्कालीन गढ़वालियों की कोई अलग बटालियन नहीं थी। उन्हें गोरखा पलटनों में भर्ती होना पड़ता था। उस समय पांचवीं गोरखा पलटन वर्तमान पश्चिमी पाकिस्तान के ऐबटाबाद नामक स्थान पर थी। अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए कई दिनों तक पैदल चलकर ये सन् 1847 ई0 को ऐबटाबाद पहुँचे और भर्ती हो गए[4]।

अपने प्रारंभिक सैनिक के रूप में सेवाकार्यों हेतु बलभद्रसिंह नेगी को बटालियन के साथ सरहदी युद्धों में भेज दिया गया। पंजाब में तत्कालीन सन् 1845 ई0 से आंग्ल–सिख युद्ध चल रहा जो कि सन् 1849 ई0 तक चला[5]। कप्तान ऐवट के नेतृत्व में रणकुशलता और शौर्य प्रदर्शन के कारण इन्हें अन्य जातियों की अपेक्षा अधिक उपाधियाँ, सम्मान, पदोन्नतियाँ दी गई किन्तु श्रेय गोरखा पलटन को जाता रहा। ''इण्डियन आर्मी कास्ट्स'' के विवरणानुसार इस दौरान उन्हें आई0ओ0एम0 10.5 में से तीन गोरखा बटालियन को जिनमें गढ़वाली भर्ती किऐ जाते थे उनमें से 9.8 गढ़वाली सैनिकों के हिस्से में आये। गढ़वाली सैनिकों की प्रतिभा को देखने के बाद पाश्चात्य लेखक एडमण्ड कैण्डलर का मानना था कि इस युग में गोरखा बटालियन की शौर्य प्रशंसा, गढ़वालियों की रणकुशलता का परिणाम थी। सन् 1857 ई0 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में सैकड़ों की संख्या में गढ़वाली सैनिक भर्ती किए गए। उत्कृष्ट कार्य करते हुए इस संग्राम में बलभद्रसिंह को हवलदार मेजर का सम्मान दिया गया[6]।

तदुपरान्त अफगान युद्ध (सन् 1873 ई0 से 1879 ई0) में इन्होंने अपनी वीरता और बुद्धि चातुर्यता से सबको चकित कर दिया उस समय प्रसिद्ध युद्ध विशारद लॉर्ड रॉबर्ट्स सेनानायक नियुक्त किये गये थे। अफगान सैनिक पहाड़ी कन्दराओं में छिपे रहते थे और भारतीय फौज पर छापामार युद्ध करते थे। उनकी किसी योजना का किसी को पता नहीं चलता था इसलिए लार्ड राबर्ट्स की मुसीबतें बढ़ती जा रही थी। एक दिन रॉबर्ट्स साहब ने बलभद्रसिंह नेगी को बुलाया और उनको यह कठिन टास्क दिया कि खुफिया तौर से शत्रु के खेमे में जाएं और उनकी गुप्त योजनाओं का पता लगायें। बलभद्रसिंह एक पठान दरवेश का वेष धारण कर शत्रु खेमे में पहुँच गये और सात दिन तक मुर्दों के बीच पड़े रहे। पठान सैनिकों ने इन्हें भी मृत समझा और अपनी सारी गुप्त योजनाओं पर बातें करते रहे। सारे भेद हासिल होने के बाद बलभद्रसिंह एक रात को अपने खेमे में वापिस पहुँच गये और सारा भेद सर रॉबर्ट्स को बताकर युद्ध की योजना बनाई जिसमें वे विजयी हुए[7]।

बलभद्रसिंह नेगी के पारिवारिक अभिलेखों के अनुसार एक बार सरहदी लड़ाई में दुश्मनों का घेरा पड़ा था। आने–जाने का मार्ग अवरूद्ध था। कई सैनिक हताहत हो रहे थे इसमें बलभद्रसिंह नेगी के सिर पर भी गोली लगी। घायल अवस्था में मृत शरीरों के बीच उन्होंने अपने को पाया। कुछ होश आने पर देखा कि अंग्रेजी सेना हताहतों–घायलों को छोड़कर अपने पेरीमीटरों में छिप गई। लगातार गोलाबारी हो रही थी। हवलदार बलभद्रसिंह नेगी ने सतर्कता से मृतकों के हथियार समेटकर पास की खाई में डाल दिए और यूनिट में पहुँच कर बताया। फिर कवरिंग फायर की सहायता से मृत शरीरों को एक निश्चित स्थान पर एकत्र किया। हथियार खाई से निकालकर अपनी परवाह किए बगैर लगातार कार्य करते रहे जिसमें सभी सैनिक एवं सेनानायक हतप्रभ हो गए। 19 वर्ष की नौकरी होने पर उन्हें जमादारी की पदवी मिली। 25 वर्ष बाद ही 2/5 वीं गोरखा राइफल्स में सूबेदार हो गए और 32 वर्ष बाद सूबेदार मेजर/ऑनरी कप्तान हो गए। अपनी नौकरी के दौरान उन्हें शहंशाह के दरबार में इंग्लैंड जाने का मौका मिला। 34 वर्ष की नौकरी के उपरान्त सन् 1884 ई0 में यह सेवानिवृत्त हो गए उस समय ये पहले गढ़वाली उच्च पद प्राप्त सूबेदार मेजर थे [8]।

सैन्याधिकारी सर एफ0एस0 रॉबर्ट्स के विश्वासपात्र बनकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने पर वे प्रसिद्धि प्राप्त करने लगे। उनके कारनामों को लंदन गजेटियर तथा मेंशन इन डिस्पैच में बार–बार प्रकाशित किया गया जिससे वे समस्त सैन्य विभाग में प्रशंसा के पात्र बन गये। सेवानिवृत्ति के बावजूद इन्हें तत्कालीन गर्वनर जनरल लॉर्ड डफरिन के अंगरक्षक ए0डी0सी0 में नियुक्त किया गया और वे कलकत्ता भेजे गये जिसके बाद इन्हें 'लाट सूबेदार भी कहा गया।

गढवालियों की कोई पृथक बटालियन नहीं थी। अंग्रेज सैन्याधिकारियों ने गढ़वाली–कुमाऊँनी और गोरखाओं की एक मिली जुली पलटन बनाई जिसे 'द नासिरी–द सिरमौर एण्ड द कुमाऊँ'' नाम दिया गया जो कालान्तर में गोरखा राइफल्स कहलाई। गढ़वालियों को गोरखा की पांचवीं बटालियन में भर्ती किया जाने लगा। अंग्रेजों को गढ़वालियों की रणकुशलता व क्षमता का आंकलन हुआ। गोरखा पलटनों को उनमें गढ़वाली सैनिकों की मौजूदगी के कारण विजय मिली तबकी गोरखा राइफल्स के जिन शूरमाओं ने गढ़वाली सैनिकों को नई पहचान दी उनमें सर्वप्रथम लाट सूबेदार बलभद्रसिंह नेगी का नाम अग्रणी है उन्हें गढ़वाल रेंजीमेंट का जनक कहा जाए तो आतिशयोक्ति नहीं [9]।

गोरखा पलटन में नौकरी करके बलभद्रसिंह नेगी ने यह महसूस किया कि इन बटालियनों में रहकर गढ़वालियों को पदोन्नति के अवसर नहीं मिल पाते हैं और साथ ही कम ही गढ़वाली इनमें भर्ती हो पाते हैं। वे गढ़वालियों की पृथक् बटालियन हेतु सोचते रहते थे। उनकी हार्दिक इच्छा रहती थी कि गढ़वाली अपने सामरिक गौरव की प्राप्ति कर सकेंगे और साथ ही रोजगार का साधन भी गढ़वालियों के लिए उपलब्ध हो जाएगा जो कि सम्मानजनक था। अतः उन्होंने अपनी कर्तव्यनिष्ठा एवं अद्भुत क्षमता से अंग्रेज अधिकारियों को प्रभावित किया। काबुल–कंधार मोर्चे के अफगान युद्ध में कमाण्डर इन चीफ सर फ्रेडरिक रॉबर्ट्स के अत्यन्त प्रिय बने और उन्होंने अपनी आंतरिक इच्छा सर रॉबर्ट्स से व्यक्त की कि गढ़वालियों की एक अलग बटालियन होनी चाहिए। पहाड़ी परिस्थितियों से यद्यपि अंग्रेज वाकिफ थे लेकिन इतनी बड़ी जिम्मेदारी कोई नहीं ले सकता था। सर रॉबर्ट्स ने तत्कालीन वाइसराय लार्ड डफरिन से विचार विमर्श कर पत्राचार किया। लार्ड रॉबर्टस ने यह तक लिख डाला कि ''ए नेशन व्हिच केन प्रोड्यूस म्यन लाइक बलभद्रसिंह नेगी, मस्ट हैव ए सैपेरेट बटालियन ऑफ दियर ऑन। (एक जाति जो बलभद्रसिंह नेगी सरीखे पुरूषों को पैदा कर सकती है उसे अपनी एक अलग बटालियन अवश्य मिलनी चाहिए)[10]।

तब वायसराय ने प्रत्युत्तर में लिखा कि गढ़वाल जैसे जिले में पूरी पलटन हेतु सिपाही कैसे सम्भव हैं। इस हेतु बलभद्र सिंह नेगी ने जिम्मेदारी ली कि वह स्वयं गढ़वालियों को भर्ती करायेंगे। इस कार्य में उनके साथ उनके पुत्र सूबेदार मेजर अमर सिंह भी थे। जिन्होंने गढ़वाली पलटन की स्थापना कर्म को अंजाम तक पहुंचाया। ये दोनों ही पिता–पुत्र लैफ्टीनेन्ट कर्नल ई0पी0 मेनवरिंग के सम्पर्क में रहे। ए0डी0सी0 के रूप में कार्य करते हुए बलभद्रसिंह नेगी को लॉर्ड डफरिन के सानिध्य में रहकर गढ़वालियों की व्यथा बताने का अवसर मिलता रहा। लॉर्ड डफरिन की सिफारिश से गढ़वालियों की अलग यूनिट खड़ी करने का आदेश स्वीकृति हेतु भेजा गया।

आखिर सन् 1887 ई0 में गोरखा फौज से कुछ सिपाही एवं सरदार लेकर अल्मोड़ा में गढ़वाली पलटन की नींव डाली गई इसके कमाण्डर लैफ्टीनेन्ट कर्नल ई0पी0 मेनवरिग बनें। बलभद्रसिंह नेगी के सुझाव पर सेना की छावनी के लिए सामरिक स्थितियों को ध्यान में रखकर व सैनिकों के स्वास्थ्य को प्राथमिक मानकर कालौडांडा नामक पर्वत श्रेणी का चयन किया गया। रूहेलखण्ड के तत्कालीन ब्रिगेडियर जनरल जे0आई0 मर्रे एवं लैफ्टीनेन्ट पी0डब्ल्यू0 ग्रास के नेतृत्व में एक सर्वे पार्टी इस पहाड़ी पर भेजी गई। छावनी हेतु इसकी उपयुक्तता रिपोर्ट आधार पर विकसित करने की योजना बनी। तत्कालीन कुमाऊँ डिवीजन के कमिश्नर सर जे0एस0 कैम्पवेल ने अपनी संस्तुति जाहिर की। अल्मोड़ा में 5 मई सन् 1887 ई0 में स्थापित प्रथम गढ़वाली पलटन 4 नवम्बर सन् 1887 ई0 को अपने कमांडिंग अफसर लेफ्टीनेन्ट कर्नल ई0पी0 मेनवरिंग के नेतृत्व में कालौंडांडा (वर्तमान लैन्सडौन) पहुँची[11]।

तत्कालीन गढ़वाली बटालियनों का नाम 1/39 वीं बंगाल इन्फैन्ट्री एवं 2/3 गोरखा राइफल्स था जिसमें ओहदेदार एवं सरदार सभी गोरखे ही थे। लाट सूबेदार बलभद्रसिंह नेगी ने अपनी सेवानिवृत्ति (सन् 1888 ई0 बतौर ए0डी0सी0) के बाद रंगरूट भर्ती करने का निश्चय किया। उन्होंने अपने सैनिक झोले में रूपये भरे और अपने साथ एक आदमी को लेकर भर्ती अभियान पर चल पड़े। प्रत्येक भर्ती जवान को पाँच रूपये इनाम स्वरूप भी देते रहे ताकि ज्यादा से ज्यादा युवा प्रेरित होकर भर्ती हों। अपने साथ वे 30–35 रिक्रूट लाये। उस समय फौज में आने से लोग कतराते थे। वे सिविल में छोटी नौकरी करना पसन्द करते थे। तहसील पौड़ी एवं लैन्सडौन में बलभद्र सिंह नेगी को सफलता नहीं मिली। अतः वे चमोली एवं सरहदी इलाकों दाणापुर के लिए चले। तब कोई भर्ती पार्टी नहीं होती थी और यह रिवाज था कि हर जवान छुट्टी बिताकर अपने साथ एक दो युवकों को लायेगा जिन्हें भर्ती किया जाएगा। सैनिक का प्रारम्भिक वेतन पांच रूपये प्रतिमाह था जिसमें मासिक खर्चा मात्र एक रूपया होता था। अब बंगाल इन्फैन्ट्री का नाम बदलकर 2/39 वीं गढ़वाल राइफल्स हो गया। अब गढ़वाली पलटन की प्रगति एवं छावनी भी विकसित होने लगी। कप्तान बलभद्रसिंह नेगी की सैन्य सेवाओं से प्रसन्न होकर उनके बड़े लड़के को सीधे कमीशन जमादार तथा दूसरे लड़के को हवलदार

बनाया गया। साथ ही बलभद्र सिंह नेगी को अपनी उत्कृष्ट सेवाओं हेतु 600 एकड़ की भूमि जागीर मंजूर की गई वर्तमान में बलभद्र (कोटद्वार) का नाम दिया गया[12]।

अपनी सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने गढ़वाल राइफल्स रेंजीमेंटल सेन्टर से लगातार सम्पर्क रखा एवं उच्चाधिकारियों से लगातार नई योजनाओं पर विचार विमर्श करते रहते थे। अपने गढ़वालियों के साथ–साथ अपने पुत्रों को भी वे उच्चादर्शों की सीख देते रहे। अपने अन्तिम काल में मिलिट्री अस्पताल लैन्सडौन में ही उनका 64 वर्ष की आयु में सन् 1893 ई0 को देहावसान हो गया[13]। एक प्रकार से एक महान युग निर्माता का अंत हो गया जो कि गढ़वालियों एवं देश को अपार सम्पत्ति रूपी गढ़वाल राइफल्स दे गया और वीरता को अनवरत् बनाये रखने की प्रेरणा दे गया।

उपर्युक्त विवरणों से स्पष्ट होता है कि लाट सूबेदार बलभद्रसिंह नेगी एक कर्तव्यनिष्ठ, परिश्रमी एवं दृढ़ निश्चय के धनी थे। यद्यपि उनकी बहादुरी एवं सैन्य क्षेत्र में किए गए कार्य छिपे नहीं है लेकिन जनमानस अभी तक पूर्ण रूप से उनसे वाकिफ नहीं हो पाया है। उनके द्वारा पृथक बटालियन खोलने से गढ़वालियों को जहाँ सामरिक गौरव की प्राप्ति हुई साथ ही समस्त गढ़वाल क्षेत्र के लिए रोजगार का सम्मानजनक मार्ग भी प्रशस्त हुआ है। उनकी कर्मठता के बल पर शारीरिक सुदृढ़ता, कार्यशैली के प्रभाव से उनके पुत्रों को कमीशन की प्राप्ति उनकी बहादुरी की प्रामाणिकता है। गढ़वाल सम्भाग जहाँ रोटी के लिए दैनिक मजदूरी कर आपूर्ति कर पाता था अब अधिकाशंतः बच्चों को सेना में भर्ती कर देश सेवा में साथ–साथ स्थैतिक सुधार में भी सफल हुआ है।

आर्थिक सम्बल मिलने के साथ–साथ सामाजिक रूप से भी लाभ पहुँचा है। सामाजिक राजनैतिक क्रियाकलापों में भी उनकी सुव्यवस्थित कार्यशैली से समाजसेवा में पूर्व सैनिक/कार्यरत सैनिकों को वरीयता मिलना भी महत्वपूर्ण उपलब्धि है। विरासत में मिले वीरोचित् स्वभाव हमारी संस्कृति को अक्षुण्ण बनाये हुए है। समाज संस्कृति को बचाने में, साहित्यिक गतिविधियों तथा विविध संगठनों के माध्यम से जागृति के लिए निरन्तर प्रयासरत भी है जो कि किसी न किसी रूप में उनके बलिदान को प्रदर्शित करता है। यह भी सर्वविदित है कि गढ़वाली सैनिक केवल पेट की खातिर भर्ती नहीं होता वह अपने स्वाभिमान से देश का गौरव बढ़ाने में कभी भी पीछे नहीं रहा है जो कि उन्हें निरन्तर पूर्वजों से सीख के रूप में मिलती रही है।

गढ़वाल राइफल्स की पृथक बटालियन खोलने के लिए जहाँ लाट सूबेदार साहब को इतनी मशक्कतें करनी पड़ी थी आज उसी उद्गम बिन्दु से यह अपनी 19 बटालियनों, 20वीं गढ़वाल स्काउट्स एवं दो टेरीटोरियल बटालियनों (121 टी0ए0, 127 टी0ए0 इको) सहित विस्तृत स्वरूप ले चुकी है और सम्पूर्ण देश में विशिष्ट प्रशिक्षण हेतु गढ़वाल राइफल्स रेंजीमेंटल सेंटर, लैन्सडौन सुविख्यात है। निरन्तर अपनी विजयों से जहाँ गढ़वाल राइफल्स ख्यातिलब्ध तो है ही वहीं पर्यावरण सम्बर्द्धन, पूर्व सैनिकों के हितार्थ, आपदा में राहत कार्यों आदि के लिए कृत संकल्पित भी है। लाट सूबेदार बलभद्र सिंह नेगी ने अपने पैतृक गांव में जो गूल निर्माण कर सिंचाई साधन उपलब्ध कराया उससे पर्यावरण संतुलन एवं दैनिक उपयोगी वस्तुओं का भी उत्पादन कर ग्रामीणों को लाभान्वित किया जो कि अब तक अनवरत है। उनके उत्तराधिकारियों/संतति ने सैन्य क्षेत्र में भर्ती होकर परम्परा कायम रखी आधे से ज्यादा पारिवारिकगण आज भी सैन्य सेवा में है। ईनामी जागीर के रूप में मिली घोसीखाता की जमीन आज बलभद्रपुर के नाम से प्रसिद्ध है तथा शिक्षा, साहित्य, आवासीय योजनाओं, उद्योग में अग्रणी बनता जा रहा है।

अपनी सन्तति के लिए भविष्यद्रष्टा बन चुके लाट सूबेदार बलभद्रसिंह नेगी की चौथी, पाँचवी पीढ़ी ने उनकी स्मृति में सोसाइटी बनाकर 28 बीघे के क्षेत्र में व्यावसायिक शिक्षा संस्थान खोला है। संस्थान के अन्दर प्रविष्ट होते ही उनकी आकर्षक फोटो लगी है। उनके पारिवारिकगण कुछ खेती कार्य में लगे हैं कुछ सेवानिवृत्ति के बाद सामाजिक कार्यों में योगदान दे रहे हैं एवं कुछ सैन्य सेवा में कार्यरत हैं। गढ़वाल राइफल्स रेंजीमेंटल सेन्टर द्वारा लाट सूबेदार साहब की स्मृति में कार्यक्रम भी आयोजित होते हैं जिसमें परिजनों को भी बुलाकर सम्मानित किया जाता है। उनकी एतिहासिक विरासत रूपी अवधारणाओं को गढ़वाली जवान निरन्तर अपने कर्त्तव्यपथ पर दृढ़ होकर देश सेवा में तत्पर है। आज उनके द्वारा अर्जित किए गए मैडल, भारी भरकम लौह तिजोरी, लॉर्ड डफरिन की फोटो, ए0डी0सी0 रूप में उनकी फोटो जहाँ उनके स्मृति चिन्ह हैं वहीं गढ़वाल राइफल्स की बटालियनें एवं रेजीमेंटल केन्द्र लैन्सडौन उनके वास्तविक स्मारक हैं जो हर एक गढ़वाली के गौरवमयी प्रेरणास्रोत हैं।

संदर्भ–सूची

1. पहाड़–अठारहवीं उन्नीसवीं सदी का हिमालय, संपादक–शेखर पाठक, तल्लीताल–नैनीताल वर्ष 1998, पृष्ठ–176

2. गढ़वाली 2004–रियूनियन स्पेशल, प्रकाशकः द कमांडांट, द गढ़वाल राइफल्स रेजीमेंटल सेंटर लैन्सडौन, 2004, पृष्ठ–117
3. पारिवारिक अभिलेख–नेगी परिवार का उद्‌भव–लेखक आनन्दसिंह नेगी, पौत्र बलभद्रसिंह नेगी 1972, पृष्ठ–03–04
4. गढ़वाल की दिवंगत विभूतियाँ–डॉ0 भक्तदर्शन, द्वितीय संस्करण, देहरादून, 1980 ई0 पृष्ठ–179
5. आंग्ल–सिख युद्ध–1845–1849 ई0 प्रकाशक बैजनाथ कैड़िया प्रोपराइटर वार्सीक प्रेस मिर्जापुर स्ट्रीट कलकत्ता पृष्ठ 105–106
6. उत्तराखण्ड की सैन्य परम्परा–संपादक डॉ0 यशवन्त कटौंच, प्रकाशक– उत्तराखण्ड शोध संस्थान, 1994 ई0, प्रथम संस्करण, पृष्ठ–38
7. गढ़वाली–2004–रियूनियन स्पेशल, प्रकाशकः दः कमांडांट, द गढ़वाल राइफल्स रेजीमेंटल सेंटर लैन्सडौन, 2004, पृष्ठ–117
8. पारिवारिक अभिलेख–नेगी परिवार का उद्‌भव–लेखक आनन्दसिंह नेगी, पौत्र बलभद्रसिंह नेगी 1972, पृष्ठ–11
9. लैन्सडौन (समाज, संस्कृति एवं इतिहास) संपादक–अश्वनी कोटनाला, प्रकाशक लैन्सडौन पुस्तकालय समिति, प्रथम संस्करण 2004, पृष्ठ–149
10. गढ़वाली पलटन का संक्षिप्त इतिहास–लेखक कुंवर सिंह नेगी कर्मठ, कालेश्वर प्रेस, कोटद्वार सन् 2000 ई0, पृष्ठ 09
11. स्मारिका–लैन्सडौन नगर शताब्दी समारोह, संपादक–सुरेश चन्द्र वर्मा प्रकाशक–शताब्दी समारोह समिति लैन्सडौन, वर्ष 1987 ई0।
12. गढ़वाली पलटन का संक्षिप्त इतिहास–लेखक कुंवर सिंह नेगी कर्मठ, कालेश्वर प्रेस, कोटद्वार, सन् 2000 ई0, पृष्ठ–04–05

130 गढ़वाल की दिवंगत विभूतियाँ–डॉ0 भक्तिदर्शन, द्वितीय संस्करण, देहरादून, 1980 ई0 पृष्ठ–181–182

****